P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

लघु एवं कुटीर उद्योग चलाने वाले व्यवसायियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नई तकनीकों को अवगत कराना

लक्ष्मी अग्निहोत्री
सहायक प्राध्यापक,
गृह विज्ञान संकाय,
सरोजनी नायडू स्वशासी कॉलेज,
भोपाल (म.प्र.)

रुची अस्थाना
शोध छात्रा,
गृह विज्ञान संकाय,
सरोजनी नायडू स्वशासी कॉलेज,
भोपाल (म.प्र.)

सारांश

जिस तरह हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है,उसी तरह हमारे समाज में इन उद्योगो को चलाने वाले व्यवसायियो का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है।

मुख्य शब्द : स्वतंत्र चर, परतंत्र चर

उद्देश्य

लघु एवं कुटीर उद्योग चलाने वाले व्यवसायियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नई तकनीकों को अवगत कराना।

परिचय

लघु एवं कुटीर उद्योगों को चलाने वाले व्यवसायियों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए सरकार ने कई प्रकार की योजनाएं चलाई है जिसके अन्तर्गत इन व्यवसायियों को अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए नई नई तकनीकों से अवगत कराया जाता है और उसके प्रयोग के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाता है। प्रत्येक शहर में व्यापार मेले भी लगाए जाते है जिसमें उन्हे अपने उद्योगों में नये नये प्रयोग करने के बारे में बताया जाता है।

अमेरिका के लघु व्यवसाय अधिनियम के अनुसार

''लघु व्यवसाय संगठन वह होता है जिसका स्वामित्व एवं संचालन स्वतंत्र होता है तथा जो अपने कार्य क्षेत्र में एकाधिकार भूमिका नहीं रखता है।

पी.एन. धर तथा एच.एफ. लिडाल के अनुसार

''कुटीर उद्योग लगभग पूरी तरह घरेलू होते है। इसमें किराये के मजदूरो का बहुत कम या बिल्कुल ही प्रयोग नही किया जाता है। ये उद्योग कच्चा माल स्थानीय बाजारों से प्राप्त करते है और अपना अधिकांश उत्पादन स्थानीय बाजारों में ही बेचते है। यह लघु आकार के ग्रामीण स्थानीय एवं पिछड़ी तकनीक वाले उद्योग होते है।

पूर्व अनुसंधान

बेर्ना (2001) ने अपने अध्ययन शीर्षक इन्ट्रोपेन्याोरशिप इन मद्रास स्टेट में उधमियों में पाये जाने वाली मुख्य विशेषताओं तथा पूंजी, व्यवसायिक अनुभव तकनीकी ज्ञान तथा पारिवारिक पृष्ठ भूमि को रेखांकित किया है।

अली एम.जे. (2004) राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने देश के गांवो के विकास की साश्वत वकालत की उन्होने कहा की भारत के गांवो का विकास लघु एवं ग्रामीण उद्योगों द्वारा उन्हे आर्थिक सक्षम बना कर किया जा सकता है।

एस. के बासु (2007) लघु उद्योगों की भूमिका और समस्याओं पर विचार करते है। राष्ट्र के आर्थिक कार्यक्रमों में उनके महत्व पर जोर देते हुए वे उनकी वित्तिय समस्याओं तथा उनकी सहायता करने में राज्य वित्तिय निगम के कार्यो की भी पूरी चर्चा करते है।

चर

स्वतंत्र चर – लघु एवं कृटीर उद्योग व्यवसायी

परतंत्र चर – नई तकनीक।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक –1

अपने व्यवसाय के लिए नई तकनीकों की आवश्यकता है।

उद्योग	हॉ	नही	योग
कुटीर उद्योग	138 (92.00%)	12 (8.0%)	150 (100%)
लघु उद्योग	148 (98.7%)	2 (1.3%)	150 (100%)
समग्र वेक्षण	286 (95.0%)	14 (4.7%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी के परिणामों से स्पष्ट होता है कि 300 लघु एवं कुटीर उद्योग चलाने वाले व्यवसायियो में कुटीर उद्योग के 92.0% तथा लघु उद्योग के 98.7 % व्यवसाययों को अपने व्यवसाय में नई तकनिकों की आवश्यकता है। जबकि कुटीर उद्योग के 8.0 % तथा लघु उद्योग के 1.3 % व्यवसायियों को इस प्रकार की कोई आवश्यकता नही है।

सारणी क्रमांक –2

किस प्रकार की नई तकनीक का उपयोग चाहते है

उद्योग	मशीनों द्वारा	प्रशिक्षित कारीगर	नए तरीके के उपकरण	सभी	योग
कुटीर उद्योग	2 (1.3%)	144 (196.0%)	3 (2.0%)	1 (0.7%)	150 (100%)
लघु उद्योग	9 (6.0%)	113 (75.3%)	23 (15.3%)	5 (3.3%)	150 (100%)
समग्र सर्वेक्षण	11 (3.7%)	257 (85.7%)	26 (8.7%)	6 (2.0%)	300 (100%)

उपरोक्त सारणी के परिणामों से स्पष्ट होता है कि 300 लघु एवं कुटीर उद्योग चलाने वाले व्यवसायियों मे कुटीर उद्योग के 1.3 % तथा लघु उद्योग के 6.0% व्यवसायी मशीनो द्वारा नई तकनीक का उपयोग चाहते है। 96.0 % कुटीर उद्योग तथा 75.3 % लघु उद्योग के व्यवसायी प्रशिक्षित कारीगर, 2.0 % कुटीर उद्योग तथा 15.3 % लघु उद्योग के व्यवसायी नए तरीके के उपकरण, 0.7 % कुटीर उद्योग तथा 3.3 % लघु उद्योग के व्यवसायी उपरोक्त सभी तकनीकों का उपयोग चाहते है।

सारणी क्रमांक –3

व्यवसाय में इन नई तकनीकों का उपयोग करके आप अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते है।

उद्योग	हॉ	नही	योग
कुटीर उद्योग	145 (96.7%)	5(3.3%)	150(100%)
लघु उद्योग	149(99.3%)	1(0.7%)	150(100%)
समग्रसर्वेक्षण	294(98.0%)	6(2.0%)	300(100%)

उपरोक्त सारणी के परिणामों के स्पष्ट होता है कि 300 लघु एवं कुटीर उद्योग चलाने वाले व्यवसायियों में96.7 : कुटीर उद्योग 99.3:लघु उद्योग के व्यवसायी अपने व्यवसाय में नई तकनिकों का उपयोग करके अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते है। जबकि 3.3 : कुटीर उद्योग तथा 0.7 : लघु उद्योग के व्यवसायियों के अनुसार उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

सारणी क्रमांक –4

व्यवसाय के विकास के लिए नई तकनिको के बारे में जानने का प्रयत्न करते है।

उद्योग	हॉ	नही	योग
कुटीरउद्योग	131(87.3%)	19(12.7%)	150(100%)
लघु उद्योग	148(98.7%)	2(1.3%)	150(100%)
समस्तसर्वेक्षण	279(93.0%)	21(7.0%)	300(100%)

उपरोक्त सारणी के परिणामों के स्पष्ट होता है कि 300 लघु एवं कुटीर उद्योग चलाने वाले व्यवसायियो में कुटीर उद्योग के 87.3% व्यवसायी तथा लघु उद्योग के98.7 % व्यवसायी अपने व्यवसाय के विकास के लिए नई तकनीकों के बारे में जानने का प्रयास करते है,जबकि कुटीर उद्योग के 12.7 % व्यवसायी तथा लघु उद्योग के 1.3 % व्यवसायी इस प्रकार का कोई प्रयास नही करते है।

निष्कर्ष

1. लघु एवं कुटीर के अधिकांश व्यवसायी अपने व्यवसाय में नई तकनीकों का उपयोग करके उसे आगे बढ़ाना चाहते है।
2. लघु एवं कुटीर उद्योग के अधिकांश व्यवसायी अपने व्यवसाय को नई दिशा देने के लिए तथा उसे सफल बनाने के लिए प्रशिक्षित कारीगरों का उपयोग चाहते है।
3. अपने व्यवसाय में नई तकनीकों का प्रयोग करके अपनी आर्थिक स्थिाति सुधारने वाले लघु एवं कुटीर उद्योग के व्यवसायियों की संख्या अधिक है।
4. लघु एवं कुटीर उद्योग के अधिकांशतः व्यवसायियों की अपने व्यवसाय के विकास के लिए नई तकनीकों के बारे में जानने की उत्सुकता होती है। तथा वो उसे जानने का प्रयत्न भी करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 एस0 पी0 माथुर, भारत में उद्यमिता विकास, प्रथम संस्करण 2007 हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई, पृष्ठ संख्या 2783
2. डॉ0 जय प्रकाश मिश्र– भारतीय अर्थव्यवस्था (प्रारम्भिक, सांख्यिकी के साथ) 2006, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 213
3. Berna, (2001) Entrepreneurship in Madras State, Yojna , April 30, Vol.35, No-7, PP-6-7
4. Ali M.Z (2004) : Absenteeism in small scale industries, SEDME Journal, Vol.31, No-4, December 2003
5. S.K. Basu, (2007): 'Place and problems of small scale Industries Calcutta", Mukharjee and co. Pvt. ltd.